المكتب التعاوني للدعوة و الإرشاد وتوعيةالجاليات بالأحساء
تحت إشراف وزارة الشئون الإسلامية و الأوقاف و الدعوة و الإرشاد
अहसा इस्लामिक सेंटर
2022-अहसा-31982-फोनः03-5866672-0509402066

ईद की सारी खुशयाँ आप सबको मुबारक हों

ईद के कुछ आदाब

इस्लाम धर्म में केवल दो ईद है,एक ईदुल्फ़ित्र जो रमज़ान के बाद एक शव्वाल को होती है दूसरी ईदुल्अज़्हा(बक़रईद) जो दस ज़िल्हिज्जह को है । इसके अतिरिक्त इस्लाम में कोई अन्य ईद नहीं है । अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मदीनह मुनव्वरह आये तो आप ने देखा कि मदीनह वाले दो दिन खेल कूद करते हैं तो आप ने पूछा (यह दो दिन कैसे हैं ? लोगों ने उत्तर दिया कि हम लोग जाहिलिय्यत के समय में इन दिनों में खेला करते थे, जिस पर रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अल्लाह ने तुम लोगों को इसके बदले इस से उत्तम तथा महान दिन दिया है,ईदुल्अज़्हा का दिन तथा ईदुल्फित्र् का दिन) (सही सुनन अबूदाऊदः1134)

अतःइन दोनों ईदों के अतिरिक्त कुछ मुसलमानों ने दूसरे धर्म वालों से प्रभावित होकर नाना प्रकार की ईदें गढ़ ली हैं उदाहरणतः ईद मीलादे नबी,ईद वफ़ाते नबी,ईद मेअ़राजे नबी, ईद शबेबरात आदि । जब कि इन ईदों का इस्लाम धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है । इस लिये मुसलमानों को इस से बचना चाहिए ।

हम निम्न में ईद के कुछ आदाब लिख रहें हैं समस्त मुसलमानों से निवेदन हैं कि इसे अपनायें !

1- ईद का चाँद देखने के बाद अधिक से अधिक तक्बीर कहनी चाहिये,तक्बीर के शब्द यह हैं :

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइलाह इल्लल्लाह वल्लाहुअक्बर अल्लाहुअक्बर वलिल्लाहिल् हम्द) (इरवाउलग़लील-3-125)

2- ईद के दिन स्नान करना, धर्म अनुसार बनाव सिंगार करना,बिना दुरुपयोग(फुजूल खर्ची) अच्छे से अच्छे कपडे पहनना (पुरुषों का कपड़ा टखने के ऊपर रहेगा) पुरुषों का सुगंध तथा खुशबू लगाना सुन्नत से साबित है । (सही बुखारी-948)

3- ईदुल्फ़ित्र के दिन खुजूर खा कर ईदगाह जाना सुन्नत है । अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते है कि : (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम बिना कुछ खुजूर खाये नहीं निकलते थे)तथा दूसरी हदीस में है कि(आप ताक़ खाते थे यानी 3-5-9 अदि)(सही बुखारी-953)

और ईदुल् अज़हा के दिन ईदगाह से वापस आकर खाना सुन्नत है,बुरैदह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि (कुर्बानी के दिन रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम उस समय तक नहीं खाते थे जब तक - ईदगाह - से वापस न आजाते थे(सही सुनने इब्ने माजह-1434)

4- ईद के दिन धर्म अनुसार खुशी मनाना धर्म की निशानी है अतः उस दिन उचित खुशियाँ मनाना,जायज़ खेल कूद करना, इस्लामी लोरियाँ तथा गीतें पढ़ना,इस्लामी गीतों का मुशाइरह करना, अपने बच्चों के लिए जायज़ एवं मनमोहक खेल कूद का प्रबन्ध करना जायज़ है ।

5- ईद के दिन ईदगाह पैदल जाना अना चाहिये तथा ईद की सलात(नमाज़) मैदान-ईदगाह- में पढ़ना चाहिये,अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं : (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुल्फित्र तथा ईदुल्अज़हा में ईदगाह जाते थे। (सही बुखारी व मसिलम-)

हाँ ज़रूरत के समय मस्जिद में भी ईद की सलात पढ़ना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सबित है ,इसी प्रकार इस्लामी प्रदह का प्रबन्ध करके ओरतों को ईदगाह ले जाने का आदेश दिया है चाहे वे हैज़ की हालत में ही क्यों न हों वे सलात से अलग रहैंगी तथा मुसलमानों की दुआ मे शामिल रहेंगी । इसी प्रकार किसी बाधा के समय सवारी से भी जा सकते हैं ।

6- ईद के दिन सुबह तड़के निकलना चाहिये अबू उमैर बिन अनस ने बयान किया है कि (कुछ लोगों ने चाँद देखा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए तो आप ने उन्हें दिन चढ़ने के बाद कुछ खाने और सुबह तड़के ईद के लिए निकलने का निर्देश दिया । (सही सुनन नसई-1556)

7- ईदगाह में ईद की सलात से पहले कोई सलात नहीं है ,अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:(नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईदुल्फित्र के दिन निकले और ईद की सलात दो रकअत अदा की उस से पहले या उस के बाद कोई सलात न पढ़ी (मुत्तफ़क़ अलैह) हाँ अगर ईद की सलात मस्जिद में पढ़ने के लिए गये हैं तो तहिय्यतुल् मस्जिद पढ़लें गे ।

8- दोनों ईद की सलात के लिये अज़ान तथा इक़ामत नहीं है जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि:(नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें खुत्बह से पहले बिना अज़ान तथा इक़ामत के सलात पढ़ाई (सही सुनन नसई-615561)

9- ईद का समय चाशत(सूरज ऊपर होने) के समय तक है । यज़ीद बिन हूमैर रहबी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन बुस्र लोगों के साथ ईदुल्फित्र या ईदुल्अज़हा में निकले तो उन्हों ने इमाम के देर से आने को नापसन्द किया तथा कहा कि हम लोग इस समय ईद की सलात पढ़ चुके होते थे और वह समय(कराहत का समय निकलने के बाद)नफ़ली सलाह का समय था । (सही सुनन अबूदाऊद-1135)

10- ईद की सालात ईद के खुत्बह से पहले पढ़ी जायेगी,इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि :(अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम,अबू बक्र,उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों ईद की सालत खुत्बह से पहले पढ़ते थे (सही सुनन नसई -1563)

11- दोनों ईद की सलात केवल दो रकअत है(सही सुनन नसई-1565)

ईद की सलात इस प्रकार पढ़ी जायेगी!

इमाम तक्बीर तहरीमह(पहली बार अल्लाहु अक्बर कहना)के बाद पहली रकअ़त में दुआ़येसना फिर सात बार अल्लाहु अक्बर कहे और पीछे वाले भी उस के साथ कहते रहें फिर इमाम आवाज़ के साथ सूरह फातिहा पढ़े और पीछे वाले भी धीरे धीरे बिना आवाज़ के उसके साथ सूरह फ़ातिहा पढ़ें ,फिर इमाम ऊँची आवाज़ के साथ सूरह अअ़ला पढ़े फिर रुकूअ़ तथा सजदे करे ,फिर दूसरी रकअ़त के लिए खड़े होकर सूरह फातिहा पढ़ने से पहले पाँच बार अल्लाहु अक्बर कहे,फिर सूरह फ़ातिहा और सूरह ग़ाशियह पढ़े फिर रुकूअ,सजदह और तशह्हुद के बाद दोनों ओर सलाम फेरे । ईद की सलात में पहली रकअ़त में सात बार और दूसरी रकअ़त में पाँच बार तक्बीर ज़वायद है तथा पहली रकअ़त में सूरह अअ़ला या सूरह क़ाफ़ और दूसरी रकअत में सूरह ग़ाशियह या सूरह इक़्तरबत पढ़ना सुन्नत है (सही सुनन इब्ने माजह-1063)

12- दोनों ईद का खुत्बह ईद की सलात के बाद होगा,इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि :(मैं गवाही देता हूँ कि मैं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ईद में हाज़िर हुवा तो आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पहले सलात अदा की फिर खुत्बह दिया-सही सुनन नसई -1568)

13- दोनों ईद में केवल एक खुत्बह देना सुन्नत है । तथा ईद का खुत्बह सुनना सुन्नत है अनिवार्य नहीं,अब्दुल्लाह बिन साइब बयान करते हैं कि:(नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ईद की सलात पढ़ाई और फरमायाः जो जाना चाहे जासकता है और जो रुकना चाहे रुक सकता है । (सही सुनन नसई-1570)

14- ईद का खुत्बह देने वाले के लिए धर्म अनुसार बनाव सिंगार करना,अच्छे से अच्छा कपडे पहनना सुन्नत है । अबू रमसह रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को खुत्बह देते हुए देखा आप के मुबारक शरीर पर दो हरी चादरें थीं (सही सुनन नसई-1571)

15- इमाम को दोनों ईद का खुत्बह खड़े हो कर लोगों के ओर मुन्ह करके देना चाहिए,इसी प्रकार ज़रूरत के समय किसी आदमी पर टेक भी लगा सकता है । खुत्बह में सब से पहले अल्लाह की परशंसा रसूल पर दरूद फिर लोगों को दीन की बात बताये , अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहू अलैहि

वसल्लम की अनुसरण करने का शौक़ दिलाये अतः विशेष रूप से महिलाओं को भी सम्बोधित करे उन्हें अल्लाह से डरने, अल्लाह एवं रसूल की अनुसरण करने पर उभारते हुये दान एवं खैरात करने पर उभारे ।(सही सुनन नसई-1573-1574-1575

16- अगर ईद का दिन जुमा के दिन पड जाये तो जुमा के बारे में इजाज़त है चाहे जुमा की सलात पढ़े या न पढ़े (सही सुनन नसई-1590)

हाँ अगर जुमा की सलाह नहीं पढ़ी है तो ज़ुहर की सलाह चार रकअ़त पढ़ना ज़रूरी है और अगर कोई मुतअय्यन खतीब है तो उसे खुत्बह देना होगा सिवाये इसके कि कोई भी जुमा की सलात पढ़ने न आये ।

17- ईद के लिए एक मार्ग से जाना तथा दूसरे मार्ग से वापस आना सुन्नत है । (सही सुनन नसई-1082)

18- ईद से वापसी के बाद घर में दो रकअत सलात पढ़ना सुन्नत है,अबू सईद खुदरी बयान करते हैं कि: (रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद से पहले कोई सलात नहीं पढ़ते थे और जब घर वापस आते तो दो रकअत सालत पढ़ते-सही (सही सुनन इब्ने माजाह-1293)

19- ईद की मुबारक बादी देना उचित है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी एक दूसरे को तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिनका(अल्लाह पाक हमारी तथा तुम्हारी उपासना स्वीकार करे) कहा करते थे ।(फ़तहुल बारी भाग-2-446)

20- अगर किसी गाँव के बासी केवल तीन मुसलमान हों तो उन लोगों को ईद की सलाह पढ़नी चाहिये ।(शरहुल मुमतअ-इबने उसैमीन- भाग-5-170)

21- यात्री के लिये ईद की सलात नहीं है क्यों कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्कह विजय करते समय मक्कह पधारे तथा एक शव्वाल तक वहाँ रहे प्रन्तु आप ने ईद की सलाह नहीं पढ़ी क्यों कि आप यात्री थे।(मुग़नी भाग-3-287)

22- अगर किसी की ईद की सलात छूट जाए तो ईद की सलात के प्रकार दो रकअत पढ़ सकता है क्यों कि इमाम बुखारी रहिमहुल्लाहु ने मुअल्लक़ हदीस बयान किया है कि (अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने सेवक इब्ने अबी उत्बह को ज़ावियह(जो बसरह देश से दो कोस दूरी पर था)में आदेश दिया तो उन्हों ने अपने घर वालों को जमा किया तथा नागरिकियों के ईद की सलात के प्रकार ईद की सलात पढ़ाई)(सही बुखारी)

ईद की ग़लतियाँ!

हर मुसलमाान को अल्लाह पाक की ओर से यह निर्देश दिया गया है कि वे अपने सारे धार्मिक कामों में मात्र अल्लाह पाक तथा उसके अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन करें प्रन्तु कुछ लोगों ने अपनी ओर से बहुत कुछ गढ़ लिया तथा उसे धर्म समझ कर करने लगे इसी कारण उचित होगा कि हम कुछ ऐसे कामों को भी बता दें जो लोग ईद में

करते हैं जबकि यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित एवं साबित नहीं हैं ।

1- ईद की पूरी रात ईबादत तथा उपासना में बिताना । इस का कारण कुछ ज़ईफ हदीसें है ।

जैसे यह हदीस कि (जिसने अल्लाह पाक के लिये सवाब चाहते हुए दोनों ईद की रातों को तहज्जुद पढ़ा तो उसका दिल उस दिन मुरदह नहीं होगा जिस दिन सारे दिल मुरदह होजायेंगे) (यह हदीस जअ़ीफ है,देखें ज़अ़ीफुल् जामिअ़-अल्बानी -5742)

चुनांचे सारी रातों में से दोनों ईदों की रातों को इबादत के लिये जागने की कोई सही हदीस नही है,हाँ अगर कोई तहज्जुद की सलात रोजाना पढ़ता है तो इन रातों मे भी पढ़ सकता है मगर केवल दोनों ईदों की रातों में तहज्जुद पढ़ना या कोई खास इबादत करना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है ।

2- दिन तथा रात के पाँच समय की सलात छोड कर केवल ईद की सलात का इहतिमाम करना बे मुनासिब बात है जबकि बहुत सारे मुसलमान केवल जुमा और ईद की सलात ही पढ़ते है, यह बहुत बडा गुनाह तथा पाप है बल्कि बहुत सारे उलमा ने ऐसे आदमी को काफिर कहा है ।

3- ईद के दिन ईद की सलात के बाद मुरदों की ज़ियारत के लिये क़ब्रस्तान जाना बिदअ़त है क्यों कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से या सहाबा किराम से साबित नहीं है जबकि सहाबा हर भलाई के कामों के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे ।

4- लोगों का एक ही समय तथा एक आवाज़ ,एक लय में ईद की तक्बीर कहना हदीस से साबित नहीं है,इसी लिए इसे उलमा किराम ने ईद की बिदअ़तों मे गिना है,हर आदमी अकेले अकेले खुद तक्बीर कहे, लोगों के साथ एक आवाज़ में न कहे क्योंकि ऐसा करना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबासे से साबित नहीं है ।

5- ईद के दिन औरतों और बच्चों को ईदगाह न लेजाना । जबकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ोर देकर इन्हें ले जाने का आज्ञा दिया है, यहाँ तक कि अगर औरतें हैज़ यानी माहवारी में हों तब भी, वह ईद की सालात नहीं पढ़ेंगी केवल मुसलमानों की दुआ़ में भागीदार रहेंगी । हाँ जरूरी है कि औरत इस्लामी परदे के साथ ईदगाह जाये और उनके लिए ईदगाह में अलग बेठने के लिये प्रबन्ध किया जाये ।

अल्लाह तआ़ला सभी मुसलमानों को दीन की समझ दे,और अपने ईमान तथा अ़मल के बचाव का अवसर दे आमीन ।

आप का शुभेच्छुक

अताउर्रहमान सईदी